Introduction

प्राक्कथन

हिन्दी में एम. ए. करने के उपरान्त मेरी रूचि आधुनिक काव्य के अध्ययन की ओर आकर्षित हुई, छायावाद से लेकर अद्यतन काव्य शिल्पों और काव्य प्रस्तुतियों का जब मैंने अध्ययन किया तो आधुनिक काव्य में निहित पौराणिक आख्यानों की सन्निहितिने मुझे अधिक आकर्षित किया, एक तो पौराणिक आख्यानों के प्रति स्वाभाविक आकर्षण रहता ही है, उसमें भी कविता का साहचर्य उसमें सोने में सुहागा का काम करता है, परिभाषा की दृष्टि से भी इस सन्दर्भ में विपुल सृजन हुआ है, और हर कवि ने अपने मौलिक दृष्टिकोण से इन आख्यानों को नये आयाम दिये हैं, स्वतंत्रता पूर्व के आख्यानक काव्य अभिधा-परक होने के कारण सामयिक सन्दर्भों से अत्यधिक नहीं जुड़ पाते हैं । यत्र - तत्र सांकेतिक सन्निहतियाँ ही इस ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं, किन्तु स्वावन्त्र्योत्तर और विशेष रूप से साठोत्तर कालावधि की आख्यानक काव्य रचनाओं ने विशेष ध्यान आकर्षित किया है, इनमें समाविष्ट सामयिक समस्यायें, भ्रष्ट राजनीति, प्रदूषित पारिवारिक सम्बन्ध, टूटते सामाजिक मूल्य और वैचारिक मनोद्वन्द्वों का बड़ा ही सार्थक प्रयोग हुआ है, अपनी इस अध्ययन यात्रा के दरम्यान ही मैंने यह तय कर लिया था, कि अपना शोध प्रबन्ध पौराणिक आख्यानों की प्रासांगिक प्रस्तुतियों को लेकर ही सम्पन्न करूँगा ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में अनेक दृष्टिकोणों से यह स्पष्ट किया गया है, कि प्रस्तुत विषय आज के सन्दर्भ में सर्वथा प्रासांगिक और महत्त्वपूर्ण है, कथ्य प्रस्तुती के लिए पौराणिक पात्र चाहे - "रामायण" से लिया गया हो या महाभारत से अथवा श्रीमद्भागवत से सभी अपनी-अपनी कुन्ठाओं संत्रासों और दमित कांक्षाओं में छटपटाते नजर आते हैं, सामयिक राजनीतिक षड्यन्त्रों और प्रदूषित वैचारिक परिवेशों को इन पात्रों के अन्तरद्वन्द्वों के माध्यम से बड़े ही सार्थक रूप में व्यक्त किये गये हैं, पौराणिक आख्यानों की सामयिक प्रासांगिकता ने इस विषय के महत्व को स्पष्ट किया और इस विषय पर शोध-प्रबन्ध लिखने की मेरी धारणा और भी बलवती हो गयी ।

प्रस्तुत विषय से संदर्भित वैसे तो कुछ अध्ययन अन्यान्य लेखकों द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं, किन्तु साठोत्तरी काव्य में पौराणिक आख्यानों की प्रासांगिक प्रस्तुतियों को लक्ष्य में रखकर इस प्रकार का अध्ययन प्रथम बार ही प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है ।

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से साठोत्तरी मिथक काव्य की सार्थकता और एक विस्तृत पटल पर उसका विश्लेषण इस शोधप्रबन्ध की अपनी मौलिकता है ।

हिन्दी साहित्य के तमाम अध्ययन में यह शोध प्रबन्ध अपनी विशिष्ट उपयोगिता प्रमाणित करता है, इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से आख्यानक काव्य-रचना से संलिष्ट तमाम कृतियों का एक ही स्थान पृहद विश्लेषण इस शोध - प्रबन्ध की अपनी विशिष्टता है, जो ज्ञान के क्षेत्र में एक अपूर्व उपयोगिता लेकर प्रस्तुत हुआ है । साहित्य के अध्येता के लिए पौराणिक आख्यानों के सन्दर्भित काव्य-कृतियों का मौलिक ढ़ंग से विवेचन उसके ज्ञान को विस्तार देने में सहायक सिद्ध हुआ ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कुल सात अध्यायों में विभक्त किया गया है ।

प्रथम अध्याय में हिन्दी कविता में आख्यानक प्रयोग की परम्पराओं पर सोदाहरण प्रकाश डाला गया है इस अध्ययन को विस्तार देते हुए पौराणिक आख्यानों की प्रासांगिकता को भी स्पष्ट किया गया है, पुराण कथाओं की प्रासांगिक प्रस्तुतियों के विविध-आयाम- सौदाहरण विवेचित किये गये हैं ।

द्वितीय अध्याय में साठोत्तरी पौराणिक आख्यानक काव्य रचनाओं में प्रयुक्त बिम्ब और प्रतीक योजना को विवेचित किया गया है, इस अध्याय में प्रारम्भ में बिम्ब और प्रतीक को स्पष्ट करते हुए, मिथकीय बिम्ब और कव्या - भिप्राय की संतुलित प्रयुक्ति पर प्रकाश डाला गया है, प्रासांगिक संदर्भों में आख्यानक बिम्ब एवं प्रतीकों के वैविध्यपूर्ण प्रयोगों को भी विश्लेषित किया गया है, और अन्त में साठोत्तरी हिन्दी कविता का आख्यानक शिल्प भी विविध रूपों में विवेचित किया गया है ।

अध्याय तृतीय में पौराणिक आख्यानक काव्य प्रयोगों के स्वरूप और मिथक प्रयोग की प्रविधि पर प्रकाश डाला गया है, इसमें मिथ की परिभाषा मिथ अर्थात् मिथक को स्पष्ट किया गया है, मिथक के बहुविधि प्रयोगों की चर्चा की गई है, मिथक के अर्थ को विस्तृत रूप से विवेचित किया गया है, मिथक के विविध सन्दर्भों में हुए प्रयोगों की चर्चा भी की गई है, मिथक के पौराणिक तथा प्रासांगिक दोनों ही स्वरूपों को स्पष्ट किया गया है, और अन्त में मिथक और पुराण के संदर्भ में अपनी विवेचना प्रस्तुत की गई है ।

चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ स्पष्ट की गई हैं, नवीन प्रयोगों एवं व्यवहृत विषयों को विश्लेषित किया गया है, साठोत्तरी काव्य आख्यान और मिथक के विविध सन्दर्भों को समझाया गया है, पौराणिक आख्यानक की प्रासंगिकता को लेकर राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक सन्दर्भों को व्याख्यायित किया गया है, मानसिक द्वन्द्व एवं व्यक्ति परक वेदनाओं का साधारणीकृत स्वरूप भी स्पष्ट किया गया है ।

पंचम अध्याय में पौराणिक अख्यानक काव्य-रचनाओं में प्रयुक्त भाषा के विविध स्वरूपों की चर्चा की गई है, इस सन्दर्भ में शब्द संयोजना एवं शब्द शक्तियों को सोदाहरण विवेचित किया गया है, काव्य में प्रयुक्त संवाद संयोजना एवं अभिष्ट कथ्य प्रस्तुतियों के विविध आयामों को भी स्पष्ट किया गया है, काव्य-भाषा के तेवर एवं विषयानुकूल मिजाज को भी अभिव्यक्त किया गया है ।

षष्टम् अध्याय में साठोत्तरी मिथक कविता और उसके प्रमुख हस्ताक्षरों के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गई है, प्रमुख कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है, तथा प्रमुख कवियों की विशिष्ट आख्यानक काव्य-रचनाओं के सन्दर्भ में यथा शक्य जानकारी देते हुए काव्य-तत्वों की दृष्टि से चर्चायें की गई हैं ।

अंतिम सप्तम अध्याय उपसंहार का है, जिसमें साठोत्तरी पौराणिक आख्यानक हिन्दी काव्य की प्रासंगिकता को लेकर समग्र विशिष्ट काव्य प्रस्तुतियों का मूल्यांकन किया गया हैं, तथा अनेक दृष्टिकोणों से संदर्भित कवियों की मिथक कविताओं का विश्लेषण किया गया है, अन्त में निष्कर्ष निकालते हुए शोध प्रबन्ध का उपसंहार किया गया है, तथा परिशिष्ट में कुछ विशिष्ट साक्षात्कारों के साथ सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची संलग्न की गई है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लेखन में सहायक हिन्दी के अनेक मनिषी विद्वानों की उपयोगी पुस्तकों का मैंने साभार सहयोग प्राप्त किया है, मैं तत्सम्बन्धी समस्त हिन्दी विद्वानों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ, महाराजा सयाजी राव विश्वविधालय बड़ौदा के हिन्दी विभाग के रीडर डॉ० प्रताप नारायण "झा" के समर्थ मार्गदर्शन में मैंने यह शोध प्रबन्ध सम्पन्न किया है ।

डॉ0 झा, मेरे एम. ए. अध्ययन काल में गुरू रहे हैं, तथा उनका वात्सल्य स्नेह एवं उनकी विशिष्ट अनुकम्पा मुझ पर बराबर बनी रही, है, मैं हृदय से श्रद्धानत होकर आपके वरिष्ठ व्यक्तित्व का अभिनंदन करता हुआ आपके प्रति अपना विशिष्ट आभार प्रदर्शित करता हूँ । हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ0 रमण भाई पाठक ने भी मुझे अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की है, तथा मेरा उत्साह वर्धन किया है, मैं उनके प्रति भी अपना आभार व्यक्त करता हूँ । हिन्दी विभाग के सभी गुरूओं ने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहन और मार्गदर्शन दिया है । मैं उन सबके प्रति श्रद्धावत होकर हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ । हिन्दी के वरिष्ठ कवि एवं समर्थ समालोचक डॉ0 विष्णु विराट का सहयोग एवं उनके निर्देशन ने मुझे समय-समय पर उत्साहित किया है, विषय संयोजना विशिष्ट कवियों से सम्पर्क तथा उनकी रचनाओं को उपलब्ध कराने में डॉ0 विष्णु विराट का सहयोग महत्वपूर्ण रहा है, मैंने आपके निजी पुस्तकालय का भी यथोचित प्रयोग किया है, इन सबकी उपयोगिताओं को मात्र आभार प्रदर्शित करके मैं औपचारिक पूर्ति नहीं करना चाहता, मैं इस उपलब्धि को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता ।

मेरे समग्र लेखन में सहायक एवं समय-समय पर मुझे बल प्रदान करने वाले मेरे पूज्य पिताजी, श्री मोहन प्रसाद यादव एवं माता जी, के प्रति भी मैं श्रद्धानत हूँ, यदि माँ - बाप का वरद हस्त और शुभाषीश मेरे पास न होता तो शायद मैं यह दुष्कर्म कार्य सम्पन्न न कर पाता, अपनी पत्नी रानी यादव के प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ, जिसने हर समय मेरे लेखन कार्य में सहयोग दिया, तथा घर में एक सहज एवं उत्प्रेरक वातावरण बनाये रखा ।

अंत में अपने परममित्र श्री अशोक श्रीवास्तव के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके प्रोत्साहन स्वरूप मैं यह महत् कार्य सम्पन्न कर सका ।

इस शोध प्रबन्ध में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में जो भी भाव सहायक एवं सहयोगी हुए हैं, उन सब के प्रति मैं अपना धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ ।

निवेदक

ओमप्रकाश यादव

(ओम प्रकाश यादव)